FOR MLIS STUDENTS

Course : - Masters of Library and Information Science (MLIS)

Paper-I

Prepared By: - Aftab Ahmad, Assistant Librarian, Faculty Library Science
School of Library and Information Sciences, Nalanda Open University

Topic: - Representation Of Information:

Sign, Symbols, Language and Scope

Scanned with CamScanner

इकाई-2

सूचना का प्रतिनिधित्व: चिन्ह, प्रतीक, भाषा एवं विस्तार (Representation of Information: Sign, Symbols, Language and Scope)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

2.0 उद्देश्य (Objectives)

2.1 परिचय (Introduction)

2.2 सूचना का प्रतिनिधित्व (Representation of Information)

2.3 संकेत (Signal)

2.4 चिन्ह (Signs)

2.5 प्रतीक (Symbol)

2.6 सारांश (Summary)

2.7 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

2.8 प्रस्तावित पाठ (Suggested Reading)

2.0 उद्देश्य (Objective)

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य सूचना के प्रतिनिधित्व के विभिन्न माध्यमों की पहचान करना एवं सूचना हस्तांतरण में उनके महत्व को समझाना है। इसके अर्न्तगत हम विभिन्न माध्यमो को न केवल चिन्हित करेंगे, बल्कि सूचना प्रतिनिधित्व में उनकी भूमिका को स्पष्ट करेंगे। उक्त संदर्भ में हम संकेतों को पारिभाषित करेंगे, उनकी विशेषताओं एवं प्रकारों पर चर्चा करेंगे। तत्पश्चात सूचना के प्रतिनिधित्व में प्रतीकों की भूमिका को समझने के लिए इनको पारिभाषित करते हुए इनकी विशेषताओं एवं प्रकारों पर प्रकाश डालेंगे। इसी क्रम में हम विभिन्न चिह्नों को पारिभाषित करते हुए उसके विभिन्न घटकों को समझने का प्रयास करेंगे। ततपश्चात् चिह्नों की विशेषताओं एवं प्रकारों पर विवरण प्रस्तुत करेंगे।

Scanned with CamScanner

2.1 परिचय (Introduction)

मनुष्य के विचार एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति पर विभिन्न स्वरूपों में स्थानांतरित होते है। इन विभिन्न स्वरूपों की पहचान करना एवं उन्हें प्रर्याप्त महत्व देते हुए उनका विश्लेषण करना सूचना के हस्तांतरण हेतु अत्यंत आवश्यक है। आज यह स्पष्ट हो चुका है कि मानव जीवन में सूचना का हस्तांतरण मात्र मौखिक वार्तालाप, लिखित शब्दों, वाक्यों अथवा वर्णन से ही नही होता। इसके स्थानांतरण अथवा निरूपण के कुछ अन्य माध्यम जैसे– संकेत, चिन्ह एवं प्रतीक भी प्रयोग में लाये जाते हैं, जो आज के व्यवहारिक जीवन में प्रभावशाली एवं स्थापित सूचना स्थानांतरण के माध्यम हो गये हैं।

वर्तमान दैनित्य जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इन माध्यमों का योगदान हमे स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। उदाहरण के स्वरूप में आज की यातायात व्यवस्था का आधार ही संकेत (Signal) नियंत्रित व्यवस्था है। इसी प्रकार आज के व्यापारिक परिदृश्य में विभिन्न संस्थाएं, व्यापारिक प्रतिष्ठान अथवा उत्पाद भी विभिन्न प्रतीकों (Symbol) से ज्यादा आसानी से पहचानी जा सकती है। आम नागरिक इन प्रतिष्ठानों अथवा उत्पादों को कई बार उनके व्यापारिक नाम से न जानकर उनके प्रतीकों से चिन्हित करने का प्रयास करते है। इसी प्रकार से दैनिक जीवन से संबधित हमारे क्रियाकलापों को आसानी से समझाने में चिन्हों की भागीदारी महत्वपूर्ण है। यह चिन्ह भाषाओं के दायरे से हट कर वैश्विक स्तर पर सूचना के प्रतिनिधित्व के स्वीकार्य माध्यम हैं।

2.2 सूचना का प्रतिनिधित्व (Representation of Information)

सूचना का प्रतिनिधित्व किसी शब्द, अक्षर या विचारों का मानसिक काल्पनिक प्रदर्शन का उदाहरण या कार्य है। सूचना अनिश्चित, अनिर्मित, अनाकर्षित तथा अवर्णित तत्व है। जो कि मानसिक अवधारणा के परे है, सूचना के तत्वों पर मजबूत पकड के लिए यह आवश्यक है कि इसे समानुरुप, क्रमवार तथा सुव्यवस्थित बनाया जाये।

केल्विन मैकगैरी ने यह विचार प्रस्तुत किया कि सूचना में विभेदीय विशेषतायें होनी चाहिए ताकि जब प्राप्तकर्ता इसे प्राप्त करें, तो वह इसे आसानी से चारों तरफ के वातावरण से अलग कर सकें।

मैकगैरी ने सूचना संवहन के तीन प्रकारों का उल्लेख किया है–

1. संकेत (Signals)
2. प्रतीक (Symbol)
3. चिन्ह (Signs)

2.3 संकेत (Signal)

संकेत एक तरह से किसी व्यक्ति को अवगत कराने, सचेत करने, निर्देशित करने अथवा आदेशित करने के लिए प्रयोग में लाये गये इशारों इत्यादि के स्वरूप में सूचना स्थानातरित करने का प्रयास है। व्यवहार में संकेतों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग यातायात संकेतों आदि के रूप में किया जाता है।

Scanned with CamScanner

2.3.1 परिभाषा (Definition)

केविन मैकगैरी ने अपनी पुस्तक The changing context of Information: An Introductory analysis में स्पष्ट किया है कि संकेत एक वास्तव में विभिन्न चिन्हों का स्वरूप होता है, जिनकी निम्न विशेषताऐं है–

2.3.2 संकेतों की विशेषता (Charecteristics of Signals)

संकेतों की विभिन्न विशेषताऐं निम्नलिखित हैं–

1. संकेतों की स्थिर प्रकृति नहीं होती। वे समय एवं परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होते रहते है।
2. संकेत शुद्ध रूप से तत्कालीन परिस्थितियों के लिए प्रासंगिक होते हैं।
3. संकेतों का अर्थ विभिन्न व्यक्तियों के लिए अलग–अलग होता है।
4. संकेत सदैव अनुक्रियाशीलता हेतु प्रेरक होते हैं।
5. संकेत विभिन्न समाजों अथवा समुदायों एवं उनके विचारों, परम्पराओं तथा कला से प्रभावित होते हैं।
6. संकेत विभिन्न समाजों अथवा समुदायों मे सूचनाओं को सचारित करने की विशेषता रखते है।

2.3.3 संकेतों के प्रकार (Types of Signals)

संकेतों के विभिन्न प्रकार निम्नलिखित हैं–

1. संकल्पित या निश्चयामक संकेत (Deterministic Signal)

इस तरह के संकेत पूर्व निर्धारित अथवा पूर्व संकल्पित होते हैं और ये घटना के घटित होने के पहले से ही निर्धारित रहते हैं। इन्हें आसानी से अनुमानित किया जा सकता है। ऐसे संकेतों को संकल्पित या निश्चयामक संकेत (Deterministic Signal) कहते है। उहारण के तौर पर वातावरण के बदलाव के प्राकृतिक संकेत।

2. यादृच्छिक संकेत (Random Signal)

यादृच्छिक संकेत ऐसे संकेत हैं, जिनका कभी भी पूर्वानुमान नही लगाया जा सकता और वे अचानक ही घटित होते हैं। ऐसे संकेतों को Random Signal भी कहते हैं। उदाहरण के तौर पर किसी व्यक्ति के हृदय के इलेक्ट्रोकार्डियो ग्राम (ECG) के परीक्षण से प्राप्त ग्राफ के संकेत।

3. अवरोध संकेत (Noise Signal)

इस तरह के संकेतों को सामान्यतः सूचना के संचार में अवरोध के रूप में जाना जाता है। इसीलिए इनके निरूपण में Noise शब्द का प्रयोग किया जाता है। शाब्दिक तौर पर Noise कान को न पसंद आने वाली ध्वनि होती है। इसका एक आसान उदाहरण किसी वाहन का हार्न से पैदा की गई

Scanned with CamScanner

ध्वनि है।

2.4 चिह्न (Signs)

चिन्ह या Signs, आकार या संकेत के प्रतिनिधित्व के प्रयोग के लिए स्वच्छंद चिन्ह है। विकिपीडिया के अनुसार, चिन्ह एक ऐसा तत्व है जो दूसरे तत्वों को प्रकट करता है। चिन्ह भाषा, दर्शन तथा लक्षण विज्ञान में प्रसंग को प्रदर्शित करता है।

दूसरी तरफ केविन मैकगैरी के अनुसार– चिन्ह किसी वस्तु या घटना का भौतिक साक्ष्य है, जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है।

2.4.1 चिह्न की विशेषताऐं (Charecteristics of Signs)

संकेतों की विभिन्न विशेषताऐं निम्नलिखित हैं–

- चिन्ह निश्चित नहीं हो सकता।
- चिन्ह का प्रयोग किसी भी सांस्कर्षतिक सीमा से परे सूचना प्रतिनिधित्व में होता है।
- चिन्ह का हमेशा प्रासंगिक होता है।
- चिन्ह किसी जाँच की प्रारम्भिक अवस्था का शुरुआत का एक उपकरण है।
- चिन्ह भ्रामक हो सकता है। अतः इसे निश्चित (पक्का) करने की आवश्यकता होती है।
- चिन्ह अनिश्चित प्रकर्षति का होता है।

2.4.2 चिह्न के प्रकार (Types of Signs)

पीयर्स के अनुसार चिन्ह मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं–

- **क्वालिसाइन (Qualisign)**

  यह अनुभूति के गुण को प्रकट करता है।

- **सिनसाइन (Sinsign)**

  यह किसी कार्य या प्रतिरोध या किसी तत्व की वास्तविक घटना से सम्बन्धित होता है।

- **लेगीसाइन (Legisign)**

  यह मानदण्ड, विचार, कानून या आदत से सम्बन्धित बना होता है।

Phènomenological category के उल्लेखनीय वर्गीकरण के अनुसार–

- **आइकन (Icon)**

चिह्न वह तत्व है जो एक कार्य या तथ्यों का नैतिकता के गुणों के द्वारा प्रतिनिधित्व या वर्णन करता है।

- **इन्डेक्स (Index)**

Scanned with CamScanner

यह वास्तविक रुप से इसमें संलिप्त गुणो के द्वारा कार्यों या तथ्यों का प्रदर्शन या प्रतिनिधित्व करता है।

- **सिमबल (Symbol)**

यह उन तथ्यों या कार्यों का प्रतिनिधित्व करता है जिससे आसानी से व्याख्या की जा सकती हो।

2.5 प्रतीक (Symbol)

प्रतीक चिह्न या अंक या अक्षरों की समूह है जो अचेतन मन को कुछ अतिरिक्त बताता है। उदाहरण के तौर पर रासायनिक प्रतीक Ag या लाल क्रास प्रतीक।

2.5.1 परिभाषा (Definition)

क्लाइव हेरान ने अपनी पुस्तक The Value of Symbol में प्रतीक को दृष्टिगत या दृश्य संक्षेप लेख बताया है, जो कि अमूर्त अवधारणा है।

केल्विन मैक्ग्रारी के अनुसार, प्रतीक किसी घटना या विचार या तथ्य को प्रदर्शित करने वाला एक विशेष प्रकार का चिह्न है, जो ठीक उसी प्रकार की भावनात्मक प्रतिक्रिया को प्रकट करता है जैसा कि उस वस्तु द्वारा उस समय निर्दिष्ट होता है।

2.5.2 प्रतीक की विशेषताऐं (Charecteristics of Symbols)

प्रतीकों की विभिन्न विशेषताऐं निम्नलिखित हैं–

- प्रतीक स्थिर पकृति का होते है।
- प्रतीक कुछ हद या सीमा तक प्रासगिक होते है।
- यह परिस्थिति के अनुसार स्वतंत्र होते हैं।
- प्रतीक आवश्यकतानुसार निर्माण एव पुर्नप्रयोग के योग्य होते हैं।
- प्रतीक ग्राहक को प्रभावित करने के लिए प्रतीक चिन्ह (Logo) प्रोत्साहन हेतु प्रयुक्त होते हैं।
- प्रतीक सांस्कर्षतिक रुप से स्वतंत्र होते हैं।

2.5.3 प्रतीक के प्रकार (Types of Symbols)

1. Abstract Symbol

इस तरह के प्रतीक सामान्यत अपनी प्रकृति के अनुसार गैर प्रतिनिधित्व वाले होते हैं। इन प्रतीकों के माध्यम से किसी घटना, क्रिया अथवा उत्पाद से सबद्ध वास्तविक परिस्थितियों का अनुमान लगाना मुश्किल होता है।

2. Living Symbol

इस तरह के प्रतीक सामान्यत: जीवन्त शरीर अथवा उसके विभिन्न अगों के स्वरूप में निरूपित होते हैं। इन प्रतीकों में जीवन्तता का स्पष्ट अनुभव होता है।

Scanned with CamScanner

3. Animated Symbol

इस तरह के प्रतीकों का प्रयोग किसी घटना के घटित होने की आभासी अनुभूति अथवा भ्रम पैदा करने के लिए अचानक (बिना किसी क्रम के) चिन्हित किये गये विभिन्न चित्रों को एक तारतम्य में प्रस्तुत करने का प्रयास होता है।

4. Compound Symbol

इस तरह के प्रतीकों को टैक्सट, ग्राफिक्स एवं ऐनीमेटेड चित्रों की समायोजन करते हुए बनाया जाता है। सामान्य तौर पर इस तरह के प्रतीक विभिन्न संस्थाओं के मोनोग्राम के रूप में प्रयोग में लाये जाते हैं।

5. Artifact Symbol

इस तरह के प्रतीकों में मानव द्वारा निर्मित विभिन्न वस्तुओं अथवा पदार्थों का प्रयोग संदेशो को व्यक्त करने के लिए किया जाता है।

6. Astrological Symbol

इस तरह के प्रतीकों का प्रयोग राशियों को निरूपित करने के लिए अथव स्वर्गिक पदार्थों को अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है। इनका प्रयोग मूलतः ज्योतिषशास्त्र एवं इससे संबन्धित गणनाओं को संपादित करने में किया जाता है।

7. Text Symbol

इस तरह के प्रतीकों के निरूपण में केवल किसी भाषा विशेष के शब्दों अथवा अक्षरों का प्रयोग किया जाता है।

2.6 सारांश (Summing-Up)

प्रस्तुत पाठ में हमने सूचना के प्रतिनिधित्व के विभिन्न माध्यमों का विस्तार से वर्णन किया। इसमें हमने संकेतों, प्रतीकों एवं चिह्नों को न केवल पारिभाषित किया बल्कि उनके विभिन्न प्रकारों एवं विशेषताओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। हमने सूचना के प्रतिनिधित्व में भाषा के महत्व एवं योगदान को भी समझने का प्रयास किया।

Scanned with CamScanner